

36

36. Anargharaghava,  
with unpublished notes,  
complete, Sharada,  
pp. 316. 52404.









5270



Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



ॐ नमः शिवायः <sup>अथः</sup> पञ्चनयमपी <sup>गमः</sup> मयि यः <sup>गमः</sup> गमः

<sup>उपपन्नः</sup> दुष्टपदं <sup>उपपन्नः</sup> भूतिनिर्गतमभीष्टं <sup>उपपन्नः</sup> निरतिशयं

<sup>उपपन्नः</sup> डिष्टमपि गतुमीष्टं <sup>उपपन्नः</sup> पञ्चनयमपि <sup>उपपन्नः</sup> भूतिनिर्गतमभीष्टं

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि वृद्धं <sup>उपपन्नः</sup> डिष्टमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि

<sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि <sup>उपपन्नः</sup> वृद्धमपि











Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



॥ भः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नाम ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



சாத்திரம்

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

३५४३३

॥ १ ॥

अनंभारः अन्वयिन्

उभयतः

विष्णुसिंह

विष्णुसिंह

पञ्चमः अध्यायः ॥ ५३ ॥

१५७३

५ ५ आसं कुतुबः भूतिदिना

五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विष्णु-पञ्चरत्न



॥ गुरुं शिरसां प्रणम्य ॥



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

The image shows a single page from an ancient manuscript, heavily deteriorated over time. The paper is a mottled yellowish-brown color, with numerous dark stains, foxing, and areas where the surface has been rubbed away or torn. The text is written in a dark, possibly iron-pigmented ink, in a script that appears to be Devanagari. The characters are somewhat blurred and difficult to decipher due to the damage and fading. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines, though many are incomplete at the right edge of the page. Some lines show signs of being part of a larger section, with small markings or symbols that might be chapter indicators or section headers. The overall condition of the page suggests it is a fragment of a much larger work, possibly a religious or philosophical text, given the style of the script and the nature of the preservation.



ਸੇਵਤਾ ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਸੁਸਲਾਭਾ</sup> ਕਰੇ ਨਾਨਕ <sup>ਤਵ ਬਲ</sup> ਕਰਮ

ਨਾਨਕ ਨਾਨਕ ਨਿਮਾਭੁ ਸੇ: ਸੁਖਾ ਮਾਭਿ <sup>ਨਾਨਕ</sup> ਕਰਮ

ਸੁਖੀ ਮਾਭਿ <sup>ਨੇਸਾ ਮਿਤੁ ਧੁਰਾਧੁਰਾ ਮਾਭਿ</sup> ਧਿਛਿ: ਕਾਂਗਾ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਿਮਾਭੁ

ਵਸੀ: <sup>ਨੇਸਾ ਮਿਤੁ ਧੁਰਾਧੁਰਾ ਮਾਭਿ</sup> ਸੁਖੀ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਕਰਮ

ਸੁਖਤ: <sup>ਸਿਵਾਭੇ</sup> ਤੁਮਾ ਕਰਮਾ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਨਾਨਕ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਤੁਮਾ ਕਰਮ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਕਰਮ ਤੁਮਾ ਕਰਮ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਕਰਮ ਤੁਮਾ ਕਰਮ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਕਰਮ ਤੁਮਾ ਕਰਮ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਕਰਮ ਤੁਮਾ ਕਰਮ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਕਰਮ ਤੁਮਾ ਕਰਮ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਕਰਮ ਤੁਮਾ ਕਰਮ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ

ਮਾਭਿ <sup>ਸੁਖਾ</sup> ਕਰਮ ਤੁਮਾ ਕਰਮ ਮਾਭਿ <sup>ਨਿਮਾਭੁ</sup> ਨਾਨਕ



[illegible]



2408



